नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

आयारो-निज्जुत्ति

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

||किंचित् प्रास्ताविकम् ||

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत २४६८, विक्रम संवत-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरिजी म.सा.ने किया था| आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूंढते आगे बढ़ रहे हैं|

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012,विक्रम संवत-२०६८,वीर संवत-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “ OnLine-आगममंजूषा ” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं|

* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार *

[१]आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है|

[२]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है|

[३]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है|

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है|

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है|

-मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeshwarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

मुनि दीपरत्नसागर

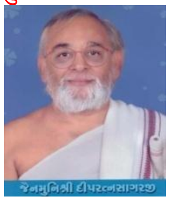

श्रीआचाराङ्गनिर्युक्तिः- वंदित्तु सव्वसिद्धे जिणे अ अणुओगदायए सव्वे। आयारस्स भगवओ निज्जुत्तिं कित्तइस्सामि ॥१॥ आयार अंग सुयखंध बंभ चरणे तहेव सत्थे य। परिणाए संणाए निक्खेवो तह दिसाणं च ॥ २ ॥ चरणदिसावज्जाणं निक्खेवों चउक्कओ य नायव्वो। चरणंमि छव्विहो खलु सत्तविहो होइ उ दिसाणं ॥३॥ जत्थ य जं जाणिज्जा निक्खेवं निक्खिवे निरवसेसं। जत्थविय न जाणिज्जा चउक्कयं निक्खिवे तत्थ ॥ ४ ॥ आयारे अंगंमि य पुव्वुद्दिट्ठो चउक्कनिक्खेवो। नवरं पुण नाणत्तं भावायारंमि तं वोच्छं ॥ ५ ॥ तस्सेगट्ठ पवत्तण पढमंग गणी तहेव परिमाणे। समुयारे सारो य सत्तहि दारेहि नाणत्तं ॥६॥ आयारो आचालो आगालो आगरो य आसासो। आयरिसो अंगंति य आइण्णाऽऽजाइ आमोक्खा ॥७॥ सव्वेसिं आयारो तित्थस्स पवत्तणे पढमयाए। सेसाइं अंगाइं इक्कारस आणुपुव्वीए ॥८॥ आयारो अंगाणं पढमं अंगं दुवालसण्हंपि। इत्थ य मोक्खोवाओ एस य सारो पवयणस्स ॥९॥ आयारम्मि अहीए जं नाओ होइ समणधम्मो उ। तम्हा आयारधरो भण्णइ (प्र० वुच्चइ) पढमं गणिट्ठाणं ॥१०॥ णवबंभचेरमइओ अट्ठारसपयसहस्सिओ वेओ। हवइ य सपंचचूलो बहुबहुतरओ पयग्गेणं ॥११॥ आयरग्गाणऽत्थो बंभच्चेरेसु सो समोयरइ। सोऽवि य सत्थपरिण्णाएँ पिंडिअत्थो समोयरइ ॥१२॥ सत्थपरिण्णाअत्थो छस्सुवि काएसु सो समोयरइ। छज्जीवणियाअत्थो पंचसुवि वएसु ओयरइ ॥१३॥ पंच य महव्वयाइं समोयरंते य सव्वदव्वेसुं। सव्वेसिं पज्जवाणं अणंतभागम्मि ओयरइ ॥१४॥ छज्जीवणिया पढमे बीए चरिमे य सव्वदव्वाइं। सेसा महव्वया खलु तदेक्कदेसेण दव्वाणं ॥१६॥ अंगाणं किं सारो ? आयारो, तस्स हवइ किं सारो ?। अणुओगऽत्थो सारो, तस्सऽवि य परूवणा सारो ॥१६॥ सारो परूवणाए चरणं तस्सवि य होइ निव्वाणं। निव्वाणस्स उ सारो अव्वाबाहं जिणा बिंति ॥१७॥ बंभम्मी य चउक्कं ठवणाए होइ बंभणुप्पत्ती। सत्तण्हं वण्णाणं नवण्ह वण्णंतराणं च ॥१८॥ एक्का मणुस्सजाई रज्जुप्पत्तीइ दो कया उसभे। तिण्णेव सिप्पवणिए सावगधम्मम्मि चत्तारि ॥१९॥ संजोगे सोलसगं सत्त य वण्णा उ नव य अंतरिणो। एए दोवि विगप्पा ठवणाबंभस्स णायव्वा ॥ २० ॥ पगई चउक्कगाणंतरे य ते हुंति सत्त वण्णा उ। आणंतरेसु चरमो वण्णो खलु होइ णायव्वो ॥ २१ ॥ अंबट्ठुग्गनिसाया अजोगवं मागहा य सूया य। खत्ता य विदेहाविय चंडाला नवमगा हुंति ॥ २२ ॥ एगंतरिए इणमो अंबट्ठो चेव होइ उग्गो य। बिइयंतरिअ निसाओ परासरं तं च पुण वेगे ॥२३॥ पडिलोमे सुद्दाई अजोगवं मागहो य सूओ य। एगंतरिए खत्ता वेदेहा चेव नायव्वा ॥२४॥ बितियंतरे उ नियमा चण्डालो सोऽवि होइ णायव्वो। अणुलोमे पडिलोमे एवं एए भवे भेया ॥२५॥ उग्गेणं खत्ताए सोवागो वेणवो विदेहेणं। अंबट्ठी सुद्दीए य बुक्कसो जो निसाएणं ॥२६॥ सुद्देण निसाईए कुक्करओ सोऽवि होइ णायव्वो। एसो बिइओ भेओ चउव्विहो होइ णायव्वो ॥२७॥ दव्वं सरीर भविओ अन्नाणीवत्थिसंजमो चेव। भावे उ वत्थिसंजम णायव्वो संजमो चेव ॥ २८ ॥ चरणंमि होइ छक्कं गइमाहारो गुणो व चरणं च। खित्तंमि जंमि खित्ते काले कालो जहिं जाओ (प्र०जो उ) ॥२९॥ भावे गइमाहारो गुणो गुणवओ पसत्थमपसत्था। गुणचरण पसत्थेण बंभचेरा नव हवंति ॥३०॥ सत्थपरिण्णा१ लोगविजओ२ य सीओसणिज्ज३ सम्मत्तं४। तह लोगसारनामं५ धूयं६ तह महपरिण्णा७ य ॥३१॥ अट्ठमए य विमोक्खो८ उवहाणसुयं९ च नवमगं भणियं। इच्चेसो आयारो आयारग्गाणि सेसाणि ॥३२॥ जिअसंजमो१ अ लोगो जह बज्झइ जह य तं पजहियव्वं२। सुहदुक्खतितिक्खाविय३ सम्मत्तं४ लोगसारो५ य ॥३३॥ निस्संगया६ य छट्ठे मोहसमुत्था परीसहुवसग्गा७। निज्जाणं८ अट्ठमए नवमे य जिणेण एवं (प्र० यं) ति९ ॥३४॥ जीवो छक्कायपरूवणा य तेसिं वहे य बंधोत्ति। विरईए अहिगारो सत्थपरिण्णाएँ णायव्वो ॥३५॥ दव्वं सत्थग्गिविसन्नेहंबिलखारलोणमाईयं। भावो य दुप्पउत्तो वाया काओ अविरई या ॥३६॥ दव्वं जाणण पच्चक्खाणे दविए सरीर उवगरणे। भावपरिण्णा जाणण पच्चक्खाणं च भावेणं ॥३७॥ सूत्रं ॥ दव्वे सच्चित्ताई भावेऽणुभवणजाणणा सण्णा। मति होइ जाणणा पुण अणुभवणा कम्मसंजुत्ता ॥३८॥ आहार भय परिग्गह मेहुण सुख दुक्ख मोह वितिगिच्छा। कोह माण (मय) माय लोहे सोगे लोगे य धम्मोहे ॥३९॥ नामं ठवणा दविए खित्ते तावे य पण्णवग भावे। एस दिसानिक्खेवो सत्तविहो होइ णायव्वो ॥४०॥ तेरसपएसियं खलु तावइएसुं भवे पएसेसुं। जं दव्वं ओगाढं जहण्णयं तं दसदिसागं ॥४१॥ अट्ठपएसो रुयगो तिरियं लोयस्स मज्झयारंमि। एस पभवो दिसाणं एसेव भवे अणुदिसाणं ॥४२॥ इंदग्गेई जम्मा य नेरुती वारुणी य वायव्वा। सोमा ईसाणावि य विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥४३॥ दुपएसाइ दुरुत्तर एगपएसा अणुत्तरा चेव। चउरो चउरो य दिसा चउराइ अणुत्तरा दुण्णि ॥४४॥ अंतो साईआओ बाहिरपासे अपज्जवसिआओ। सव्वाऽणंतपएसा सव्वा य भवंति कडजुम्मा ॥४५॥ सगडुद्धिसंठिआओ महादिसाओ हवंति चत्तारि। मुत्तावली य चउरो दो चेव हवंति रुयगनिभा ॥४६॥ जस्स जओ आइच्चो उदेइ सा तस्स होइ पुव्वदिसा। जत्तो अ अत्थमेइ उ अवरदिसा सा उ णायव्वा ॥ ४७ ॥ दाहिणपासंमि अ दाहिणा दिसा उत्तरा उ वामेणं। एया चत्तारि दिसा तावखित्ते उ अक्खाया ॥ ४८ ॥ जे मंदरस्स पुव्वेण मणुस्सा दाहिणेण अवरेण। जे आवि उत्तरेणं सव्वेसिं उत्तरो मेरू ॥ ४९ ॥ सव्वेसिं उत्तरेणं मेरू लवणो य होइ दाहिणओ। पुव्वेणं उट्ठेई अवरेणं अत्थमइ सूरो ॥ ५० ॥ जत्थ य जो पण्णवओ कस्सवि साहइ दिसासु य णिमित्तं। जत्तोमुहो य ठाई सा पुव्वा पच्छओ अवरा ॥ ५१ ॥ दाहिणपासंमि उ दाहिणा दिसा उत्तरा उ वामेणं। एयासिमन्तरेणं अण्णा चत्तारि विदिसाओ ॥५२॥ एयासिं चेव अट्ठण्हमंतरा अट्ठ हुंति अण्णाओ। सोलस सरीरउस्सयबाहल्ला सव्वतिरियदिसा ॥५३॥ हेट्ठा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पायतलाणं अहो दिसा सीसउवरिमा उड्ढा। एया अट्ठारसवी पण्णवगदिसा मुणेयव्वा ॥५४॥ एवं पकप्पिआणं दसण्ह अट्ठण्ह चेव य दिसाणं। नामाइं वुच्छामि जहक्कमं आणुपुव्वीए ॥५५॥ पुव्वा य पुव्वदक्खिण दक्खिण तह दक्खिणावरा चेव। अवरा य अवरउत्तर उत्तर पुव्वुत्तरा चेव ॥ ५६ ॥ सामुत्थाणी कविला खेलिज्जा खलु तहेव अहिधम्मा। परियाधम्मा य तहा सावत्ती पण्णवित्ती य ॥५७॥ हेट्ठा नेरइयाणं अहो दिसा उवरिमा उ देवाणं। एयाइं नामाइं पण्णवगस्सा दिसाणं तु ॥५८॥ सोलस तिरियदिसाओ सगडुद्धीसंठिया मुणेयव्वा। दो मल्लगमूलाओ उड्ढे अ अहेवि य दिसाओ ॥ ५९ ॥ मणुया तिरिया काया तहऽग्गबीया चउक्कगा चउरो। देवा नेरइया वा अट्ठारस हौंति भावदिसा ॥ ६० ॥ पण्णवगदिसाऽट्ठारस भावदिसाओऽवि तत्तिया चेव। इक्किक्कं विंधेज्जा हवंति अट्ठारसऽट्ठारा ॥ ६१ ॥ पण्णवगदिसाए पुण अहिगारो अत्थ होइ णायव्वो। जीवाण पुग्गलाण य एयासु गयागई अत्थि ॥ ६२ ॥ केसिंचि नाणसण्णा अत्थि केसिंचि नत्थि जीवाणं। कोऽहं परंमि लोए आसी ? कयरा दिसाओ वा ? ॥ ६३ ॥ जाणइ सयंमईए अन्नेसिं वावि अन्तिए सोच्चा। जाणगजणपण्णविओ जीवं तह जीवकाए वा ॥ ६४ ॥ इत्थ य सहसंमइअत्ति जं पयं तत्थ जाणणा होई। ओहीमणपज्जवनाणकेवले जाइसरणे य ॥ ६५ ॥ परवइवागरणं पुण जिणवागरणं जिणा परं नत्थि। अण्णेसिं सोच्चत्तिय जिणेहिं सव्वो परो अण्णो ॥ ६६ ॥ तत्थ अकारि करिस्संति बंधचिंता कया पुणो होइ। सहसम्मइया जाणइ कोई पुण हेतुजुत्तीए ॥६७॥ अ० १ उ१ ॥ पुढवीए निक्खेवो परूवणा लक्खणं परीमाणं। उवभोगो सत्थं वेयणा य वहणा निवित्ती य ॥ ६८ ॥ नामंठवणापुढवी दव्वपुढवी य भावपुढवी य। एसो खलु पुढवीए निक्खेवो चउविहो होइ ॥ ६९ ॥ दव्वं सरीर भविओ भावेण य होइ पुढविजीवो उ। जो पुढविनामगोयं कम्मं वेएइ सो जीवो ॥ ७० ॥ दुविहा य पुढविजीवा सुहुमा तह बायरा य लोगम्मि। सुहुमा य सव्वलोए दो चेव य बायरविहाणा ॥ ७१ ॥ दुविहा बायरपुढवी समासओ सण्हपुढवि खरपुढवी। सण्हा य पंचवण्णा खरा य छत्तीसइविहाणा ॥ ७२ ॥ पुढवी य१ सक्करा२ वालुगा३ य उवले४ सिला५ य लोणू६ से७। अय८ तंब९ तउअ१० सीसग११ रुप्प१२ सुवण्णे१३ य वइरे१४ य ॥ ७३ ॥ हरियाले१५ हिंगुलए१६ मणोसिला१७ सासगं१८ जण१९ पवाले२०। अब्भपडल२१ब्भवालुअ२२ बायरकाए मणिविहाणा ॥ ७४ ॥ गोमे२३ज्जए य२४ रुयगे२५ अंके२६ फलिहे२७ य लोहियक्खे२८ य। मरगय२९ मसारगल्ले३० भुयमोयग३१ इंदनीले३२ य ॥७५॥ चंदप्पह ३३ वेरुलिए३४ जलकंते३५ चेव सूरकन्ते३६ य। एए खरपुढवीए नामं छत्तीसइं होई ॥७६॥ वण्णरसगंधफासे जोणिप्पमुहा भवंति संखेज्जा। णेगाइं सहस्साइं हुंति विहाणंमि इक्किक्के ॥७७॥ वण्णंमि य इक्किक्के गंधंमि रसंमि तह य फासंमि। नाणत्ती कायव्वा विहाणए होइ इक्किक्के ॥७८॥ जे बायरे विहाणा पज्जत्ता तत्तिआ अपज्जत्ता। सुहुमावि हुंति दुविहा पज्जत्ता चेव अपजत्ता ॥७९॥ रुक्खाणं गुच्छाणं गुम्माण लयाण वल्लिवलयाणं। जह दीसइ नाणत्तं पुढवीकाए तहा जाण ॥ ८० ॥ ओसहि तण सेवाले पणगविहाणे य कंद मूले य। जह दीसइ नाणत्तं पुढवीकाए तहा जाण ॥८१॥ इक्कस्स दुण्ह तिण्ह व संखिज्जाण व न पासिउं सक्का। दीसंति सरीराइं पुढविजियाणं असंखाणं ॥८२॥ एएहिं सरीरेहिं पच्चक्खं ते परूविया हुंति। सेसा आणागिज्झा चक्खुप्फासं न जं (ते) इंति ॥८३॥ उवओग जोग अज्झवसाणे मइसुय अचक्खुदंसे य। अट्ठविहोदयलेसा सन्नुस्सासे कसाया य ॥ ८४॥ अट्ठी जहा सरीरंमि अणुगयं चेयणं खरं दिट्ठं। एवं जीवाणुगयं पुढविसरीरं खरं होइ ॥ ८५॥ जे बायरपज्जत्ता पयरस्स असंखभागमित्ता ते। सेसा तिन्निवि रासी वीसुं लोया असंखिज्जा ॥८६॥ पत्थेण व कुडवेण व जह कोइ मिणिज्ज सव्वधन्नाइं। एवं मविज्जमाणा हवंति लोया असंखिज्जा ॥ ८७॥ लोगागासपएसे इक्किक्कं निक्खिवे पुढविजीवं। एवं मविज्जमाणा हवंति लोआ असंखिज्जा ॥ ८८ ॥ निउणो उ होइ कालो तत्तो निउणयरयं हवइ खित्तं। अंगुलसेढीमित्ते ओसप्पिणिओ असंखिज्जा ॥ ८९ ॥ अणुसमयं च पवेसो१ निक्खमणं२ चेव पुढविजीवाणं। काए३ कायट्ठिइया४ चउरो लोया असंखिज्जा ॥९०॥ बायरपुढविक्काइयपज्जत्तो अन्नमन्नमोगाढो। सेसा ओगाहंते सुहुमा पुण सव्वलोगंमि ॥९१॥ चंकमणे य ट्ठाणे निसीयण तुयट्टणे य कयकरणे। उच्चारे पासवणे उवगरणाणं च निक्खिवणे ॥९२॥ आलेवण पहरण भूसणे य कयविक्कए किसीए य। भंडाणंपि य करणे उवभोगविही मणुस्साणं ॥ ९३ ॥ एएहिं कारणेहिँ हिंसंती पुढविकाइए जीवे। सायं गवेसमाणा परस्स दुक्खं उदीरंति ॥ ९४ ॥ हलकुलियविसकुद्दालऽलित्तयमिगसिंगकट्ठमग्गी य। उच्चारे पासवणे एयं तु समासओ सत्थं ॥९५॥ किंची सकायसत्थं किंची परकाय तदुभयं किंची। एयं तु दव्वसत्थं भावे अ असंजमो सत्थं ॥ ९६ ॥ पायच्छेयण भेयण जंघोरु तहेव अंगुवंगेसुं। जह हुंति नरा दुहिया पुढविक्काए तहा जाण ॥ ९७ ॥ नत्थि य सि अंगुवंगा तयाणुरूवा य वेयणा तेसिं। केसिंचि उदीरंती केसिंचऽतिवायए पाणे ॥९८॥ पवयंति य अणगारा ण य तेहिँ गुणेहिँ जेहिँ अणगारा। पुढविं विहिंसमाणा न हु ते वायाहिँ अणगारा ॥९९॥ अणगारवाइणो पुढविहिंसगा निग्गुणा अगारिसमा। निद्दोसत्ति य मइला विरइदुगुंछाइ मइलतरा ॥ १०० ॥ केई सयं वहंती केई अन्नेहिँ उ वहाविंती। केई अणुमन्नंती पुढविक्कायं वहेमाणा ॥ १०१ ॥ जो पुढवि समारंभइ अन्नेऽवि य सो समारभइ काए। अनियाए अ नियाए दिस्से य तहा अदिस्से य ॥१०२॥ पुढविं समारभंता हणंति तन्निस्सिए य बहुजीवे। सुहुमे य बायरे य पज्जत्ते या अपज्जत्ते ॥ १०३ ॥ एयं वियाणिऊणं पुढवीए निक्खिवंति जे दंडं। तिविहेण सव्वकालं मणेण वायाएँ काएणं ॥ १०४ ॥ गुत्ता गुत्तीहिं सव्वाहिं, समिया समिईहिं संजया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जयमाणगा सुविहिया, एरिसया हुंति अणगारा ॥१०५॥ अ० १उ० २। आउस्सवि दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। नाणत्ती उ विहाणे परिमाणुवभोगसत्थे य ॥१०६॥ दुविहा उ आउजीवा सुहुमा
तह बायरा य लोगंमि। सुहुमा य सव्वलोए पंचेव य बायरविहाणा ॥१०७॥ सुद्धोदए१ य उस्सा२ हिमे य३ महिया४ य हरतणू५ चेव। बायरआउविहाणा पंचविहा वण्णिया एए ॥ १०८॥
जे बायरपज्जत्ता पयरस्स असंखभागमित्ता ते। सेसा तिन्निवि रासी वीसुं लोगा असंखिज्जा ॥१०९॥ जह हत्थिस्स सरीरं कललावत्थस्स ऽहुणोववन्नस्स। होइ उदगंडगस्स य एसुवमा सव्व-
(आउ) जीवाणं ॥११०॥ ण्हाणे पिअणे तह धोअणे य भत्तकरणे य सेए अ। आउस्स उ परिभोगो गमणागमणे य जीवाणं ॥१११॥ एएहिं कारणेहिं हिंसंती आउकाइए जीवे। सायं गवेसमाणा
परस्स दुक्खं उदीरंति ॥११२॥ उस्सिंचणगालणधोवणे य उवगरणमत्तभंडे य। बायरआउक्काए एयं तु समासओ सत्थं ॥११३॥ किंची सकायसत्थं किंची परकाय तदुभयं किंची। एयं तु दव्वसत्थं
भावे य असंजमो सत्थं ॥११४॥ सेसाइं दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। एवं आउद्देसे निज्जुत्ती कित्तिया एसा (होइ) ॥११५॥अ० १उ० ३। तेउस्सवि दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। नाणत्ती
उ विहाणे परिमाणुवभोगसत्थे य ॥११६॥ दुविहा य तेउजीवा सुहुमा तह बायरा य लोगंमि। सुहुमा य सव्वलोए पंचेव य बायरविहाणा ॥११७॥ इंगाल१ अगणि२ अच्ची३ तह जाला४ मुम्मुरे५
य बोद्धव्वे। बायरतेउविहाणा पंचविहा वण्णिआ एए ॥११८॥ जह देहप्परिणामो रत्तिं खज्जोयगस्स सा उवमा। जरियस्स य जह उम्हा तओवमा तेउजीवाणं ॥११९॥ जे बायरपज्जत्ता पलिअस्स
असंखभागमित्ता उ। सेसा तिण्णिवि रासी वीसुं लोगा असंखिज्जा ॥१२०॥ दहणे पयावण पगासणे य सेए य भत्तकरणे य। बायरतेउक्काए उवभोगगुणा मणुस्साणं ॥१२१॥ एएहिं कारणेहिं
हिंसंती तेउकाइए जीवे। सायं गवेसमाणा परस्स दुक्खं उदीरंती ॥१२२॥ पुढवी आउक्काए उल्ला य वणस्सई तसा पाणा। बायरतेउक्काए एयं तु समासओ सत्थं ॥१२३॥ किंची सकायसत्थं
किंची परकाय तदुभयं किंची। एयं तु दव्वसत्थं भावे य असंजमो सत्थं ॥१२४॥ सेसाइं दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। एवं तेउद्देसे निज्जुत्ती कित्तिया एसा ॥१२५॥अ. १ उ. ४। पुढवीए जे दारा
वणसइकाएऽवि हुंति ते चेव। नाणत्ती उ विहाणे परिमाणुवभोगसत्थे य ॥१२६॥ दुविह वणस्सइजीवा सुहुमा तह बायरा य लोगंमि। सुहुमा य सव्वलोए दो चेव य बायरविहाणा ॥१२७॥ पत्तेया
साहारण बायरजीवा समासओ दुविहा। बारसविहऽणेगविहा समासओ छव्विहा हुंति ॥ १२८॥ रुक्खा१ गुच्छा२ गुम्मा३ लया४ य वल्ली५ य पव्वगा ६ चेव। तण१ वलय२ हरिय३ ओसहि४
जलरुह'५ कुहणा६ य बोद्धव्वा ॥१२९॥ अग्गबिया मूलबीया खंधबिया चेव पोरबीया य। बीयरुहा संमुच्छिम समासओं वणस्सईजीवा ॥१३०॥ जह सगलसरिसवाणं सिलेसमिस्साण वत्तिया
वट्टी। पत्तेयसरीराणं तह हुंति सरीरसंघाया ॥१३१॥ जह वा तिलसक्कुलिया बहुएहिं तिलेहिं मेलिया संती। पत्तेयसरीराणं तह हुंति सरीरसंघाया ॥ १३२॥ नाणाविहसंठाणा दीसंती एगजी-
विया पत्ता। खंधावि एगजीवा तालसरलनालिएरीणं ॥१३३॥ पत्तेया पज्जत्ता सेढीएँ असंखभागमित्ता ते। लोगासंखप्पज्जत्तगाण साहारणाऽणंता ॥१३४॥ एएहिं सरीरेहिं पच्चक्खं ते परूविया
जीवा। सेसा आणागिज्झा चक्खुणा जं न दीसंति ॥१३५॥ साहारणमाहारो साहारण आणपाणगहणं च। साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं एयं ॥१३६॥ एगस्स उ जं गहणं बहूण साहारणाण तं
चेव। जं बहुयाणं गहणं समासओ तंपि एगस्स ॥१३७॥ जोणिब्भूए बीए जीवो वक्कमइ सो व अन्नो वा। जोऽवि य मूले जीवो सो च्चिय पत्ते पढमयाए ॥१३८॥ जो पुण मूले जीवो सो निवत्तेइ जा
पढमपत्तं। कंदाइ जाव बीयं सेसं अन्ने पकुव्वंति ॥ (अव्याख्या)॥ चक्कागं भज्जमाणस्स, गंठी चुण्णघणो भवे। पुढवीसरिसभेएणं, अणंतजीवं वियाणेहि ॥१३९॥ गूढसिरागं पत्तं सच्छीरं जं च होइ
निच्छीरं। जं पुण पणट्ठसंधिय अणंतजीवं वियाणाहि ॥१४०॥ सेवालकच्छभाणि य अवए पणए य किंनए य हढे। एए अणंतजीवा भणिया अन्ने अणेगविहा ॥१४१॥ एगस्स दुण्ह तिण्ह व संखिज्जाण
व तहा असंखाणं। पत्तेयसरीराणं दीसंति सरीरसंघाया ॥ १४२॥ इक्कस्स दुण्ह तिण्ह व संखिज्जाण व न पासिउं सक्का। दीसंति सरीराइं निओयजीवाणऽणंताणं ॥ १४३ ॥ पत्थेण व कुडवेण
व जह कोइ मिणिज्ज सव्वधन्नाइं। एवं मविज्जमाणा हवंति लोया अणंता उ ॥१४४॥ जे बायरपज्जत्ता पयरस्स असंखभागमित्ता ते। सेसा असंखलोया तिन्निवि साहारणाऽणंता ॥१४५॥ आहारे
उवगरणे सयणासण जाण जुग्गकरणे य। आवरणपहरणेसु अ सत्थविहाणेसु अ बहूसु ॥ १४६॥ आउज्ज कट्ठकम्मे गंधंगे वत्थ मल्ल जोए य। झावणवियावणेसु अ तिल्लविहाणे अ उज्जोए
॥१४७॥ एएहिं कारणेहिं हिंसंति वणस्सई बहू जीवे। सायं गवेसमाणा परस्स दुक्खं उदीरंति ॥ १४८॥ कप्पणिकुहाणिअसियगदत्तियकुद्दालवासिपरसू अ। सत्थं वणस्सईए हत्था पाया मुहं
अग्गी ॥१४९॥ किंची सकायसत्थं किंची परकाय तदुभयं किंची। एयं तु दव्वसत्थं भावे अ असंजमो सत्थं ॥१५०॥ सेसाइं दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। एवं वणस्सईए निज्जुत्ती कित्तिया
एसा ॥१५१॥ अ. १ उ. ५। तसकाए दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। नाणत्ती उ विहाणे परिमाणुवभोगसत्थे अ ॥१५२॥ दुविहा खलु तसजीवा लद्धितसा चेव गइतसा चेव। लद्धीय तेउवाऊ
तेणऽहिगारो इहं नत्थि ॥१५३॥ नेरइयतिरियमणुया सुरा य गइओ चउव्विहा चेव। पज्जत्ताऽपज्जत्ता नेरइयाई अ नायव्वा ॥ १५४॥ तिविहा तिविहा जोणी अंडयपोअजराउआ चेव। बेइंदिय
तेइंदिय चउरो पंचिंदिया चेव ॥ १५५॥ दारं ॥ दंसणनाणचरित्ते चरियाचरिए अ दाणलाभे अ। उवभोगभोगवीरिय इंदियविसए य लद्धी य ॥ १५६॥ उवओगजोगअज्झवसाणे वीसुं च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लद्धिओदइया (णं उदया)। अट्ठविहोदय लेसा सन्नूसासे कसाए अ ॥ १५७॥ लक्खणमेवं चेव उ पयरस्स असंखभागमित्ता उ। निक्खमणे य पवेसे एगाईयावि एमेव ॥ १५८॥ निक्खम-
पवेसकालो समयाई इत्थ आवलीभागो। अंतोमुहुत्तऽविरहो उदहिसहस्साहिए दोन्नि ॥ १५९ ॥दारं॥ मंसाई परिभोगो सत्थं सत्थाइयं अणेगविहं। सारीरमाणसा वेयणा य दुविहा बहुविहा य
॥१६०॥ दारं॥ मंसस्स केइ अट्ठा केई चम्मस्स केइ रोमाणं। पिच्छाणं पुच्छाणं दंताणऽट्ठा वहिज्जंति ॥१६१॥ केई वहंति अट्ठा केइ अणट्ठा पसंगदोसेणं। कम्मपसंगपसत्ता बंधंति वहंति मारंति
॥ १६२॥ सेसाइं दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। एवं तसकायंमी निज्जुत्ती कित्तिया एसा ॥१६३॥ अ.१उ. ६॥ वाउस्सऽवि दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। नाणत्ती उ विहाणे परिमाणुव-
भोगसत्थे य ॥१६४॥ दुविहा उ वाउजीवा सुहुमा तह बायरा उ लोगंमि। सुहुमा उ सव्वलोए पंचेव य बायरविहाणा ॥ १६५॥ उक्कलिया १ मंडलिया २ गुंजा ३ घणवाय ४ सुद्धवाया ५ य।
बायरवाउविहाणा पंचविहा वण्णिया एए ॥ १६६॥ जह देवस्स सरीरं अंतद्धाणं व अंजणाईसु। एओवम आएसो वाएऽसंतेऽवि रूवंमि ॥ १६७॥ जे बायरपज्जत्ता पयरस्स असंखभागमित्ता
ते। सेसा तिन्निवि रासी वीसुं लोगा असंखिज्जा ॥ १६८॥ दारं॥ वियणधमणाभिधारण उस्सिंचणफुमणआणुपाणू अ। बायरवाउक्काए उवभोगगुणा मणुस्साणं ॥१६९॥ विअणे अ तालियंटे
सुप्प सियपत्त चेलकण्णे य। अभिधारणा य बाहिं गंधग्गी वाउसत्थाइं ॥१७०॥ किंची सकाय० ॥(अव्याख्या)॥ सेसाइं दाराइं ताइं जाइं हवंति पुढवीए। एवं वाउद्देसे निज्जुत्ती कित्तिया एसा
॥१७१॥ उ.७ अ.१॥ सयणे य अदढत्त बीयगंमि माणो अ अत्थसारो अ। भोगेसु लोगनिस्साइ लोगे अममिज्जया चेव ॥ १७२॥ लोगस्स य विजयस्स य गुणस्स मूलस्स तह य ठाणस्स।
निक्खेवो कायव्वो जंमूलागं च संसारो ॥ १७३॥ लोगत्ति य विजअत्ति य अज्झयणे लक्खणं तु निप्फण्णं। गुणमूलं ठाणंति य सुत्तालावे य निप्फण्णं ॥ १७४॥ लोगस्स य निक्खेवो अट्ठविहो
छव्विहो उ विजयस्स। भावे कसायलोगो अहिगारो तस्स विजएणं ॥१७५॥ लोगो भणिओ दव्वं खित्तं कालो अ भावविजओ अ। भवलोग भावविजओ पगयं जह बज्झई लोगो ॥ १७६॥
विजिओ कसायलोगो सेयं खु तओ नियत्तिउं होइ। कामनियत्तमई खलु संसारा मुच्चई खिप्पं ॥१७७॥ दव्वे खित्ते काले फल पज्जव गणण करण अब्भासे। गुणअगुणे अगुणगुणे भव सीलगुणे
य भावगुणे ॥१७८॥ दव्वगुणो दव्वं चिय गुणाण जं तंमि संभवो होइ। सच्चित्ते अच्चित्ते मीसंमि य होइ दव्वंमि ॥ १७९॥ संकुचिय वियसियत्तं एसो जीवस्स होइ जीवगुणो। पूरेइ हंदि लोगं
बहुप्पएसत्तणगुणेण ॥ १८०॥ देवकुरु सुसमसुसमा सिद्धी निब्भय दुगादिया चेव। कल भोअणुज्जु वंके जीवमजीवे य भावंमि ॥ १८१॥ मूले छक्कं दव्वे ओदइ उवएस आइमूलं च। खित्ते
काले मूलं भावे मूलं भवे तिविहं ॥१८२॥ ओदइयं उवदिट्ठा आइ तिगं मूलभाव ओदइअं। आयरिओ उवदिट्ठा विणयकसायादिओ आई ॥ १८३॥ णामंठवणादविए खित्तऽद्धा उड्ढ उवरई
वसही। संजम पग्गह जोहे अयल गणण संधणा भावे ॥ १८४॥ पंचसु कामगुणेसु य सद्दप्फरिसरसरूवगंधेसुं। जस्स कसाया वट्टंति मूलट्ठाणं तु संसारे ॥ १८५॥ जह सव्वपायवाणं भूमीएँ
पइट्ठियाइं मूलाइं। इय कम्मपायवाणं संसारपइट्ठिया मूला ॥१८६॥ अट्ठविहकम्मरुक्खा सव्वे ते मोहणिज्जमूलागा। कामगुणमूलगं वा तम्मूलागं च संसारो ॥ १८७॥ दुविहो अ होइ मोहो
दंसणमोहो चरित्तमोहो अ। कामा चरित्तमोहो तेणऽहिगारो इहं सुत्ते ॥ १८८॥ संसारस्स उ मूलं कम्मं तस्सवि हुंति य कसाया। ते सयणपेसअत्थाइएसु अज्झत्थओ अ ठिआ ॥ १८९॥
णामंठवणादविए उप्पत्ती पच्चए य आएसो। रसभावकसाए या तेण य कोहाइया चउरो ॥१९०॥ दव्वे खित्ते काले भवसंसारे य भावसंसारे। पंचविहो संसारो जत्थेते संसरंति जिआ ॥१९१॥
दव्वे खित्ते काले भवसंसारे य भावसंसारे। कम्मेण य संसारो तेणऽहिगारो इहं सुत्ते ॥(अव्याख्या)॥ णामंठवणाकम्मं दव्वकम्मं पओगकम्मं च। समुदाणिरियावहियं आहाकम्मं तवोकम्मं ॥१९२॥
किइकम्म भावकम्मं दसविहकम्मं समासओ होई। अट्ठविहेण उ कम्मेण एत्थ होई अहीगारो ॥ १९३॥ संसारं छेत्तुमणो कम्मं उम्मूलए तदट्ठाए। उम्मूलिज्ज कसाया तम्हा उ चइज्ज सयणाई
॥१९४॥ माया मेत्ति पिया मे भगिणी भाया य पुत्त दारा मे। अत्थंमि चेव गिद्धा जम्मणमरणाणि पावंति ॥१९५॥ अ० ३उ० १॥ बिइउद्देसे अदढो उ संजमे कोइ हुज्ज अरईए। अन्नाणकम्मलोभाइएहिँ
अज्झत्थदोसेहिं ॥१९६॥ अ० २॥ पढमे सुत्ता अस्संजयत्ति१ बिइए दुहं अणुहवंति२। तइए न हु दुक्खेणं अकरणयाए व समणुत्ति३ ॥१९७॥ उद्देसंमि चउत्थे अहिगारो उ वमणं कसायाणं। पावविर-
ईओ निउणो उ संजमो इत्थ मुक्खुत्ति४॥१९८॥ नामं ठवणा सीयं दव्वे भावे य होइ नायव्वं। एमेव य उण्हस्सवि चउव्विहो होइ निक्खेवो ॥१९९॥ दव्वे सीयलदव्वं दव्वुण्हं चेव उण्हदव्वं तु।
भावे उ पुग्गलगुणो जीवस्स गुणो अणेगविहो ॥२००॥ सीयं परीसहपमायुवसमविरई सुहं च उण्हं तु। परिसहतवुज्जमकसायसोगाहिवेयारई दुक्खं ॥ २०१॥ दारं॥ इत्थी सक्कारपरीसहो य दो
भावसीयला एए। सेसा वीसं उण्हा परीसहा हुंति नायव्वा ॥२०२॥ जे तिव्वप्परिणामा परीसहा ते भवंति उण्हा उ। जे मंदप्परिणामा परीसहा ते भवे सीया ॥२०३॥ दारं॥ धंमंमि जो पमायइ
अत्थे वा सीअलुत्ति तं बिंति। उज्जुत्तं पुण अन्नं तत्तो उण्हंति णं बिंति ॥ २०४॥ सीईभूओ परिनिव्वुओ य संतो तहेव पण्हाणो (ण्हाओ)। होउवसंतकसाओ तेणुवसंतो भवे जीवो ॥ २०५॥
अभयकरो जीवाणं सीयघरो संजमो भवइ सीओ। अस्संजमो य उण्हो एसो अन्नोऽवि पज्जाओ ॥२०६॥ निव्वाणसुहं सीयं सीईभूयं पयं अणाबाहं। इहमवि जं किंचि सुहं तं सीयं दुक्खमवि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उण्हं ॥२०७॥ डज्झइ तिव्वकसाओ सोगभिभूओ उइण्णवेओ य। उण्हयरो होइ तवो कसायमाईवि जं डहइ ॥ २०८॥ सीउण्हफाससुहदुहपरीसहकसायवेयसोयसहो। हुज्ज समणो सया उज्जु-
ओ य तवसंजमोवसमे ॥२०९॥ सीयाणि य उण्हाणि य भिक्खूणं हुंति विसहियव्वाइं। कामा न सेवियव्वा सीओसणिज्जस्स निज्जुत्ती ॥२१०॥ अ० ३॥ सुत्ता अमुणिओ सया मुणिओ सुत्तावि जागरा
हुंति। धम्मं पडुच्च एवं निद्दासुत्तेण भइयव्वं ॥२११॥ जह सुत्तमत्तमुच्छिय असहीणो पावए बहुं दुक्खं। तिव्वं अप्पडियारंमि वट्टमाणो तहा लोगो ॥२१२॥ एसेव य उवएसो पदित्त पयलाय
पंथमाईसुं। अणुहवइ जह सचेओ सुहाइं समणोऽवि तह चेव ॥२१३॥ अ० ३॥ पढमे सम्मावाओ बीए धम्मप्पवाइयपरिक्खा। तइए अणवज्जतवो न हु बालतवेण मुक्खुत्ति ॥२१४॥ उद्देसंमि चउत्थे
समासवयणेण णियमणं भणियं। तम्हा य नाणदंसणतवचरणे होइ जइयव्वं ॥२१५॥ नामंठवणासम्मं दव्वसम्मं च भावसम्मं च। एसो खलु सम्मस्सा निक्खेवो चउविहो होइ ॥ २१६॥ अह
दव्वसम्म इच्छाणुलोमियं तेसु तेसु दव्वेसुं। कयसंखयसंजुत्तो पउत्त जढ भिण्ण छिण्णं वा ॥ २१७॥ तिविहं तु भावसम्मं दंसण नाणे तहा चरित्ते य। दंसणचरणे तिविहं नाणे दुविहं तु नायव्वं
॥२१८॥ कुणमाणोऽवि य किरियं परिच्चयंतोऽवि सयणधणभोए। देंतोऽवि दुहस्स उरं न जिणइ अंधो पराणीयं ॥२१९॥ कुणमाणोऽवि निवित्तिं परिच्चयंतोऽवि सयणधणभोए। दिंतोऽवि दुहस्स
उरं मिच्छद्दिट्ठी न सिज्झइ उ ॥२२०॥ तम्हा कम्माणीयं जेउमणो दंसणंमि पयइज्जा। दंसणवओ हि सफलाणि हुंति तवनाणचरणाइं ॥२२१॥ सम्मत्तुपत्ती सावए य विरए अणंतकम्मंसे। दंस-
णमोहक्खवए उवसामन्ते य उवसंते ॥ २२२ ॥खवए य खीणमोहे जिणे अ सेढी भवे असंखिज्जा। तव्विवरीओ कालो संखिज्जगुणाइ सेढीए ॥२२३॥ आहारउवहिपूआइड्ढीसु य गारवेसु कइ-
तवियं। एमेव बारसविहे तवंमि न हु कइतवे समणो ॥ २२४ ॥सू. जे जिणवरा अईया जे संपइ जे अणागए काले। सव्वेऽवि ते अहिंसं वदिंति वदिहिंति विवदिंति ॥२२५॥ छप्पिय जीवनिकाए
णोऽवि हणे णोऽवि अ हणाविज्जा। नोऽविअ अणुमन्निज्जा सम्मत्तस्सेस निज्जुत्ती ॥२२६॥ अ४उ०१। खुड्डग पायसमासं धम्मकहंपि य अजंपमाणेणं। छन्नेण अन्नलिंगी परिच्छिया रोहगुत्तेणं
॥२२७॥ भिक्खं पविट्ठेण मएऽज्ज दिट्ठं, पमयामुहं कमलविसालनेत्तं। वक्खित्तचित्तेण न सुट्ठु नायं, सकुंडलं वा वयणं नवत्ति ॥२२८॥ फलोदएणं मि गिहं पविट्ठो, तत्थासणत्था पमया मि
दिट्ठा। वक्खित्तचित्तेण न सुट्ठु नायं, सकुंडलं वा वयणं नवित्ति ॥२२९॥ मालाविहारंमि मएऽज्ज दिट्ठा, उवासिया कंचणभूसियंगी। वक्खित्तचित्तेण न सुट्ठु नायं, सकुंडलं वा वयणं नवत्ति
॥२३०॥ खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स, अज्झप्पजोगे गयमाणसस्स। किं मज्झ एएण विचिंतिएणं ?, सकुंडलं वा वयणं नवत्ति ॥२३१॥ उल्लो सुक्को य दो छूढा, गोलया मट्टियामया। दोवि
आवडिया कुड्डे, जो उल्लो तत्थ (सोऽत्थ) लग्गइ ॥२३२॥ एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा। विरत्ता उ न लग्गंति, जहा से सुक्कगोलए ॥२३३॥ अ ४ उ २। जह खलु झुसिरं कट्ठं सुचिरं सुक्कं
लहुं डहइ अग्गी। तह खलु खवंति कम्मं सम्मंचरणे ठिया साहू ॥२३४॥ अ०४। हिंसग विसयारंभग एगचरुत्ति न मुणी पढमगंमि। विरओ मुणित्ति बिइए अविरगवाई परिग्गहिओ ॥२३५॥
तइए एसो अपरिग्गहो य निव्विन्नकामभोगो य। अव्वत्तस्सेगचरस्स पच्चवाया चउत्थंमि ॥ २३६ ॥ हरओवम तवसंयमगुत्ती निस्संगया य पंचमए। उम्मग्गवज्जणा छट्ठगंमि तह रागदोसे य
॥२३७॥ आयाणपएणावंति गोण्णनामेण लोगसारुत्ति। लोगस्स य सारस्स य चउक्कओ होइ निक्खेवो ॥२३८॥ सव्वस्स थूल गुरुए मज्झे देसप्पहाण सरिराई। धण एरंडे वइरे खइरं च जिणा-
दुराल्लाई ॥२३९॥ भावे फलसाहणया फलओ सिद्धी सुहुत्तमवरिट्ठा। साहणय नाणदंसणसंजम तवसा तहिं पगयं ॥२४०॥ लोगंमि कुसमएसु य कामपरिग्गहकुमग्गलग्गेसुं। सारो हु नाणदं-
सणतवचरणगुणा हियट्ठाए ॥२४१॥ चइऊणं संकपयं सारपयमिणं दढेण घित्तव्वं। अत्थि जिओ परमपयं जयणा जा रागदोसेहिं ॥२४२॥ लोगस्स उ को सारो ? तस्स य सारस्स को हवइ

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारो ?। तस्स य सारो सारं जइ जाणसि पुच्छिओ साह ॥२४३॥ लोगस्स सार धम्मो धम्मंपिय नाणसारियं बिंति। नाणं संजमसारं संजमसारं च निव्वाणं ॥ २४४॥ चारो चरिया चरणं
एगट्ठं वंजणं तहिं छक्कं। दव्वं तु दारुसंकमजलथलचाराइयं बहुहा ॥२४५॥ खित्तं तु जंमि खित्ते कालो काले जहिं भवे चारो। भावंमि नाणदंसण चरणं तु पसत्थमपसत्थं ॥२४६॥ लोगे चउ-
व्विहंमी समणस्स चउव्विहो कहं चारो ?। होइ धिई अहिगारो विसेसओ खित्तकालेसुं ॥२४७॥ पावोवरए अपरिग्गहे अ गुरुकुलनिसेवए जुत्ते। उम्मग्गवज्जए रागदोसविरए य से विहरे ॥२४८॥
अ०५। पढमे नियगव्विहुणणा कम्माणं बितियए तइयगंमि। उवगरणसरीराणं चउत्थए गारवतिगस्स ॥२४९॥ उवसग्गा सम्माणय विहूअणा पञ्चमंमि उद्देसे। दव्वधुयं वत्थाई भावधुयं कम्म-
मट्ठविहं ॥२५०॥ अहियासित्तुवसग्गे दिव्वे माणुस्सए तिरिच्छे य। जो विहुणइ कम्माइं भावधुयं तं वियाणाहि ॥२५१॥ अ०६। गाहावइसंजोगो कुसीलसेवा तहेवय सपक्खे। परिणाए य विवेगो
पढमुद्देसम्मि अहिगारो ॥२५२॥ बीए मग्गविजहणा देहविभूसा य मेहुणासेवा। गब्भस्स य आदाणं परिसाडण पोसणा चेव ॥ २५३ ॥ तइए खलुंकभावो आमिसपुच्छाविजहणा वसणे। पास-
वणुच्चाराणं किरिया धुवणं च वत्थस्स ॥२५४॥ विधुवणवेहाणसहत्थकम्मा इत्थीण विप्पजहणा य। देहस्स य परिकम्मं तिसमुट्ठाणंति जहियव्वं ॥ २५५ ॥ चउत्थंमि य धुवणविही परिहरणविही
य होइ वत्थस्स। तस्सेव वण्णकरणमणुन्नवणावग्गहस्सेव ॥ २५६ ॥ कडगासणपरिभोगो सिज्जायरपिंडवज्जणं चेव। सपरिग्गहपरिमाणं विवज्जणा सन्निहिस्सेव ॥ २५७॥ पंचमए अट्टपदे
अज्जणधम्मंमि तह समुट्ठाणं। थावरकायाण दया अक्कोसवहाहियासणया ॥ २५८ ॥ तसकायसमारंभो गिहमत्तविवज्जणं नवित्थीणं। जे याविय अविदिण्णा ठाणा तेसिं च सव्वेसिं ॥ २५९ ॥
छट्ठे परिवाओ संजमाउ धुवणंमि जो अ अहिगारो। आसेवणया य भवे सिणाणपरिभोगवज्जणया ॥ २६० ॥ सम्मत्ते निच्चलया सीयपरीसहहियासणं धुवणं। सूईमाईयाणं च सण्णिही अट्ठ-
पडिकाते ॥२६१॥ आसंदीयअक्करणं उवएसाणानिकायणा चेव। संलेहणियाणेया भत्तपरिण्णंतकिरिया य ॥२६२॥ पाहण्णे महसद्दो परिमाणे चेव होइ नायव्वो। पाहण्णे परिमाणे य
छव्विहो होइ निक्खेवो ॥ २६३॥ दव्वे खित्ते काले भावंमि य होंति या पहाणा उ। तेसि महासद्दो खलु पाहण्णेणं तु निप्फन्नो ॥२६४॥ दव्वे खित्ते काले भावंमि य जे भवे महंता उ। तेसु
महासद्दो खलु पमाणओ होति निप्फन्नो ॥२६५॥ दव्वे खित्ते काले भावपरिण्णा य होइ बोद्धव्वा। जाणणओ व वक्खाणओ य दुविहा पुणेक्केक्का ॥ २६६ ॥ भावपरिण्णा दुविहा मूलगुणे चेव
उत्तरगुणे य। मूलगुणे पंचविहा दुविहा पुण उत्तरगुणेसु ॥२६७॥ पाहण्णेण उ पगयं भावपरिण्णाए य तहय दुविहाए। परिणाणेसु पहाणे महापरिण्णा तओ होइ ॥२६८॥ देवीणं मणुईणं तिरि-
क्खजोणीगणाण इत्थीणं। तिविहेण परिच्चाओ महापरिण्णाएँ निज्जुत्ती ॥ २६९ ॥ अ०७। असमणुन्नस्स विमुक्खो पढमे बिइए अकप्पियविमुक्खो। पडिसेहणा य रुट्ठस्स चेव सब्भावकहणा य
॥२७०॥ (२५२) तइयंमि अंगचिट्ठाभासिय आसंकिए य कहणा य। सेसेसु अहीगारो उवगरणसरीरमुक्खेसु ॥२७१॥ उद्देसंमि चउत्थे वेहाणसगिद्धपिट्ठमरणं च। पंचमए गेलन्नं भत्तपरिन्ना य
बोद्धव्वा ॥२७२॥ छट्ठंमि उ एगत्तं इंगिणिमरणं च होइ बोद्धव्वं। सत्तमए पडिमाओ पायवगमणं च नायव्वं ॥२७३॥ अणुपुव्विविहारीणं भत्तपरिन्ना य इंगिणीमरणं। पायवगमणं च तहा अहिगारो
होइ अट्ठमए ॥२७४॥ नामंठवणविमुक्खो दव्वे खित्ते य काल भावे य। एसो उ विमुक्खस्सा निक्खेवो छव्विहो होइ ॥२७५॥ दव्वविमुक्खो नियलाइएसु खित्तंमि चारयाईसुं। काले चेइय-
महिमाइएसु अणघायमाईओ ॥ २७६॥ दुविहो भावविमुक्खो देसविमुक्खो य सव्वमुक्खो य। देसविमुक्खा साहू सव्वविमुक्खा भवे सिद्धा ॥ २७७॥ कम्मयदव्वेहि समं संजोगो होइ जो उ
जीवस्स। सो बंधो नायव्वो तस्स वियोगो भवे मुक्खो ॥२७८॥ जीवस्स अत्तजणिएहिं चेव कम्मेहिं पुव्वबद्धस्स। सव्वविवेगो जो तेण तस्स अह इत्तिओ मुक्खो ॥ २७९ ॥ भत्तपरिन्ना इंगिणि
पायवगमणं च होइ नायव्वं। जो मरइ चरिममरणं भावविमुक्खं वियाणाहि ॥ २८० ॥ सपरक्कमे य अपरक्कमे य वाघाय आणुपुव्वीए। सुत्तत्थजाणएणं समाहिमरणं तु कायव्वं ॥ २८१ ॥
सपरक्कममाएसो जह मरणं होइ अज्जवइराणं। पायवगमणं च तहा एयं अपरक्कमं मरणं ॥२८२॥ अपरक्कममाएसो जह मरणं होइ उदहिनामाणं। पाओवगमेऽवि य तहा एयं अपरक्कमं मरणं
॥ २८३ ॥ वाघाइयमाएसो अवरद्धो हुज्ज अन्नतरएणं। तोसलि महिसीइ हओ एयं वाघाइयं मरणं ॥२८४॥ अणुपुव्विगमाएसो पव्वज्जासुत्तअत्थकहणं च। वीसज्जिओ (उ) निन्तो मुक्को तिवि-
हस्स नीयस्स ॥ २८५॥ पडिचोइओ य कुविओ रण्णो जह तिक्ख सीयला आणा। तंबोले य विवेगो घट्टणया जा पसाओ य ॥ २८६॥ निप्फाइया य सीसा सउणी जह अंडगं पयत्तेणं।
बारससंवच्छरियं सो संलेहं अह करेइ ॥२८७॥ चत्तारि विचित्ताइं विगईनिज्जूहियाइं चत्तारि। संवच्छरे य दुन्नि उ एगंतरियं तु आयामं ॥२८८॥ नाइविगिट्ठो उ तवो छम्मासे परिमियं तु आया-
मं। अन्नेऽवि य छम्मासे होइ विगिट्ठं तवोकम्मं ॥२८९॥ वासं (प्र. बारस) कोडीसहियं आयामं काउ आणुपुव्वीए। गिरिकंदरंमि गंतुं पायवगमणं अह करेइ ॥२९०॥ कह नाम सो तवोकम्मपंडिओ
जो न निच्चुजुत्तप्पा। लहुविशी परिक्खेवं वच्चइ जेमंतओ चेव ?॥२९१॥ आहारेण विरहिओ अप्पाहारो य संवरनिमित्तं। हासंतो हासंतो एवाहारं निरुंभिज्जा ॥२९२॥ अ० ८। जो जइया तित्थयरो
सो तइया अप्पणो य तित्थम्मि। वण्णेइ तवोकम्मं ओहाणसुयंमि अज्झयणे ॥ २९३ ॥ सव्वेसिं तवोकम्मं निरुवसग्गं तु वण्णिय जिणाणं। नवरं तु वद्धमाणस्स सोवसग्गं मुणेयव्वं ॥ २९४ ॥

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

तित्थयरो चउनाणी सुरमहिओ सिज्झियव्वय धुवम्मि । अणिगूहियबलविरिओ तवोवहाणंमि उज्जमइ ॥२९५॥ किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयकारणा सुविहिएहिं । होइ न उज्जमियव्वं सपच्च-
वायंमि माणुस्से ? ॥२९६॥ चरिया१ सिज्जा२ य परीसहा३ य आयंकिया (ए) चिगिच्छा४ य । तवचरणेणऽहिगारो चउसुद्देसेसु नायव्वो ॥२९७॥ नामंठवणुवहाणं दव्वे भावे य होइ नायव्वं।
एमेव य सुत्तस्सवि निक्खेवो चउविहो होइ ॥२९८॥ दव्वुवहाणं सयणे भावुवहाणं तवो चरित्तस्स । तम्हा उ नाणदंसणतवचरणेहिं इहाहिगयं ॥२९९॥ जह खलु मइलं वत्थं सुज्झइ उदगाइ-
एहिं दव्वेहिं । एवं भावुवहाणेण सुज्झई कम्ममट्ठविहं ॥३००॥ ओधुणण धुणण नासण विणासणं झवण खवण सोहिकरं । छेयण भेयण फेडण डहणं धुवणं च कम्माणं ॥३०१॥ एवं तु समणुचिन्नं
वीरवरेणं महाणुभावेणं । जं अणुचरित्तु धीरा सिवमचलं जन्ति निव्वाणं ॥३०२॥(२८४)अ०९,श्रुत.१। दव्वोगाहण आएस काल कम गणण संचए भावे। अग्गं भावे उ पहाणबहुयउवयारओ तिविहं
॥३०३॥ उवयारेण उ पगयं आयारस्सेव उवरिमाइं तु। रुक्खस्स पव्वयस्स य जह अग्गाइं तहेयाइं ॥ ३०४॥ थेरेहिऽणुग्गहट्ठा सीसहिअं होउ पागडत्थं च। आयाराओ अत्थो आयारंगेसु पविभत्तो
॥३०५॥ बिइअस्स य पंचमए अट्ठमगस्स बिइयंमि उद्देसे। भणिओ पिंडो सिज्जा वत्थं पाउग्गहो चेव ॥३०६॥ पंचमगस्स चउत्थे इरिया वण्णिज्जई समासेणं। छट्ठस्स य पंचमए भासज्जायं विया-
णाहि ॥ ३०७॥ सत्तिक्कगाणि सत्तवि निज्जूढाइं महापरिन्नाओ । सत्थपरिन्ना भावण निज्जूढाओ धुयविमुत्ती ॥ ३०८॥ आयारपकप्पो पुण पच्चक्खाणस्स तइयवत्थूओ । आयारनामधिज्जा
वीसइमा पाहुडच्छेया ॥३०९॥ अव्वोगडो उ भणिओ सत्थपरिन्नाय दंडनिक्खेवो। सो पुण विभज्जमाणो तहा तहा होइ नायव्वो ॥३१०॥ एगविहो पुण सो संजमुत्ति अज्झत्थ बाहिरो य दुहा।
मणवयणकाय तिविहो चउव्विहो चाउजामो उ ॥३११॥ पंच य महव्वयाइं तु पंचहा राइभोअणे छट्ठा । सीलंगसहस्साणि य आयारस्सप्पवीभागा ॥ ३१२॥ आइक्खिउं विभइउं विन्नाउं चेव
सुहतरं होइ । एएण कारणेणं महव्वया पंच पन्नत्ता॥ ३१३ ॥ तेसिं च रक्खणट्ठा भावणा पंच पंच इक्किक्के। ता सत्थपरिन्नाए एसो अब्भिंतरो होई॥ ३१४ ॥ जावोग्गहपडिमाओ पढमा सत्ति-
क्कगा बिइअचूला। भावण विमुत्ति आयारपकप्पा तिन्नि इअ पंच॥३१५॥ (अ० १,१०) पिंडेसणाएँ जा णिज्जुत्तीसा चेव होइ सेज्जाए। वत्थेसण पाएसण उग्गहपडिमाएँ सच्चेव॥३१६॥ सव्वा वयण-
विसोही णिज्जुत्ती जा य वक्कसुद्धीए। सच्चेव णिरवसेसा भासज्जाएवि णायव्वा ॥३१७॥ सेज्जा इरिया तह उग्गहे य तिण्हंपि छक्कणिक्खेवो । पिंडे भासा वत्थे पाए य चउक्क णिक्खेवो ॥३१८॥
दव्वे खित्ते काले भावे सिज्जा य जा तहिं पगयं । केरिसिया सिज्जा खलु संजयजोगत्ति नायव्वा ? ॥३१९॥ तिविहा य दव्वसिज्जा सचित्ताऽचित्त मीसगा चेव । खित्तंमि जंमि खित्ते काले जा
जंमि कालंमि ॥ ३२० ॥ उक्कलकलिंग गोअम वग्गुमई चेव होइ नायव्वा । एयं तु उदाहरणं नायव्वं दव्वसिज्जाए ॥ ३२१॥ दुविहा य भावसिज्जा कायगए छव्विहे य भावंमि । भावे जो जत्थ
जया सुहदुहगब्भाइसिज्जासु ॥३२२॥ सव्वेऽवि य सिज्जविसोहिकारगा तहवि अत्थि उ विसेसो । उद्देसे उद्देसे वुच्छामि समासओ किंचि ॥ ३२३॥ उग्गमदोसा पढमिल्लुयंमि संसत्त पच्चवाया
य१ । बीयंमि सोअवाई बहुविहसिज्जाविवेगो२ य॥३२४॥ तइए जयंतछलणा सज्झायस्सऽणुवरोहि जइयव्वं। समविसमाईएसु य समणेणं निज्जरट्ठाए३ ॥३२५॥(अ०२,११) नामं१ ठवणाइरिया२
दव्वे३ खित्ते४ य काल५ भावे६ य। एसो खलु इरियाए निक्खेवो छव्विहो होइ ॥३२६॥ दव्वइरिया उ तिविहा सचित्ताचित्तमीसगा चेव । खित्तंमि जंमि खित्ते काले कालो जहिं होइ ॥३२७॥
भावइरिया उ दुविहा चरणिरिया चेव संजमिरिया य । समणस्स कहं गमणं निद्दोसं होइ परिसुद्धं ? ॥३२८॥ आलंबणे य काले मग्गे जयणाइ चेव परिसुद्धं। भंगेहिँ सोलसविहं जं परिसुद्धं
पसत्थं तु ॥३२९॥ चउकारणपरिसुद्धं अहवावि (हु) होज्ज कारणज्जाए । आलंबणजयणाए काले मग्गे य जइयव्वं ॥३३०॥ सव्वेऽवि ईरियविसोहिकारगा तहवि अत्थि उ विसेसो । उद्देसे उद्देसे
वुच्छामि जहक्कमं किंचि ॥ ३३१ ॥ पढमे उवागमण निग्गमो य अद्धाण नावजयणा य । बिइए आरूढछलणं जंघासंतार पुच्छा य ॥ ३३२॥ तइयंमि अदायणया अप्पडिबंधो य होइ
उवहिंमि। वज्जेयव्वं च सया संसारियरायगिहगमणं ॥३३३॥(अ० ३,१२) जह वक्कं तह भासा जाए छक्कं च होइ नायव्वं। उप्पत्तीए१ तह पज्जवं२ तरे३ जायगहणे४ य ॥३३४॥ सव्वेऽवि य वयण-
विसोहिकारगा तहवि अत्थि उ विसेसो। वयणविभत्ती पढमे उप्पत्ती वज्जणा बीए॥३३५॥ (अ०४,१३) पढमे गहणं बीए धरणं पगयं तु दव्ववत्थेणं। एमेव होइ पायं भावे पायं तु गुणधारी॥३३६॥
(अ०५-६,१४-१५) दव्वे खित्ते काले भावेऽवि य उग्गहो चउद्धा उ। देविंद१ रायउग्गह२ गिहवइ३ सागरिय४ साहम्मी५ ॥ ३३७॥ दव्वुग्गहो उ तिविहो सचित्ताचित्तमीसगो चेव । खित्तुग्गहोऽवि
तिविहो दुविहो कालुग्गहो होइ॥३३८॥ मइउग्गहो य गहणुग्गहो य भावुग्गहो दुहा होइ। इंदियनोइंदियअत्थवंजणे उग्गहो दसहा॥३३९॥ गहणुग्गहम्मि अपरिग्गहस्स समणस्स गहणपरिणामो।
कह पाडिहारियाऽपाडिहारिए होइ जइयव्वं ?॥३४०॥ (अ.७,१६) सत्तिक्कगाणि इक्कस्सराणि पुव्व भणियं तहिं ठाणं। उद्दट्ठाणे पगयं निसीहियाए तहिं छक्कं॥३४१॥ (अ०८-९,१७-१८) उच्चवइ
सरीराओ उच्चारो पसवइत्ति पासवणं। तं कह आयरमाणस्स होइ सोही न अइयारो?॥३४२॥ मुणिणा छक्कायदयावरेण सुत्तभणियंमि ओगासे। उच्चारविउस्सगो कायव्वो अप्पमत्तेणं॥३४३॥(अ.१०,
११)[दव्वं संठाणाई भावो वन्नकसिणं सभावो य]। दव्वं सद्दपरिणयं भावो उ गुणा य कित्ती य॥३४४॥ दव्वं संठाणाई भावो वन्न कसिणं सभावो य। [दव्वं सद्दपरिणयं भावो उ गुणा य कित्ती य]॥३४५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(अ. ११-१२,२०-२१) छक्कं पर इक्किक्कं त१ दन्न२ माएस३ कम४ बहु५ पहाणे६। (अ. १३,२२) अन्ने छक्कं तु पुण तदन्नमाएसओ चेव ॥३४६॥ जयमाणस्स परो जं करेइ जयणाएँ तत्थ अहिगारो। निप्पडिकम्मस्स उ अन्नमन्नकरणं अजुत्तं तु ॥३४७॥ (अ. १४,२३) दव्वं गंधंग तिलाइएसु सीउण्हविसहणाईसु। भावंमि होइ दुविहा पसत्थ तह अप्पसत्था य ॥३४८॥ पाणिवहमुसावाए अदत्तमेहु-णपरिग्गहे चेव। कोहे माणे माया लोभे य हवंति अपसत्था ॥ ३४९ ॥ दंसणनाणचरित्ते तववेरग्गे य होइ उ पसत्था। जा य जहा ता य तहा लक्खण वुच्छं सलक्खणओ ॥ ३५० ॥ तित्थगराण भगवओ पवयणपावयणिअइसइड्ढीणं। अभिगमणनमणदरिसणकित्तणसंपूअणाथुणणा॥३५१॥ जम्माभिसेयनिक्खमणचरणनाणुप्पया य निव्वाणे। दियलोअभवणमंदरनंदीसरभोमनगरेसुं॥३५२॥ अट्ठा-वयमुज्जिंते गयग्गपयए य धम्मचक्के य। पासरहावत्तनगं चमरुप्पायं च वंदामि ॥३५३॥ गणियं निमित्त जुत्ती संदिट्ठी अवितहं इमं नाणं। इय एगंतमुवगया गुणपच्चइया इमे अत्था ॥३५४॥ गुणमा-हप्पं इसिनामकित्तणं सुरनरिंदपूया य। पोराणचेइयाणि य इय एसा दंसणे होइ ॥ ३५५ ॥ तत्तं जीवाजीवा नायव्वा जाणणा इहं दिट्ठी। इह कज्जकरणकारगसिद्धी इह बंधमुक्खो य ॥ ३५६ ॥ बद्धो य बंधहेऊ बंधणबंधप्फलं सुकहियं तु। संसारपवंचोऽविय इहयं कहिओ जिणवरेहिं ॥३५७॥ नाणं भविस्सई एवमाइया वायणाइयाओ य। सज्झाए आउत्तो गुरुकुलवासो य इय नाणे ॥३५८॥ साहुमहिंसाधम्मो सच्चमदत्तविरई य बंभं च। साहु परिग्गहविरई साहु तवो बारसंगो य ॥३५९॥ वेरग्गमप्पमाओ एगत्ता (ग्गे) भावणा य परिसंगं। इय चरणमणुगयाओ भणिया इत्तो तवो वुच्छं ॥३६०॥ किह मे हविज्जऽवंझो दिवसो ? किं वा पहू तवं काउं ?। को इह दव्वे जोगो खित्ते काले समयभावे ? ॥३६१॥ उच्छाहपालणाए इति (एव) तवे संजमे य संघयणे। वेरग्गेऽणिच्चाई होइ चरित्ते इहं पगयं ॥३६२॥ (अ. १५,२४) अणिच्चे पव्वए रुप्पे भुयगस्स तहा (या) महासमुद्दे य। एए खलु अहिगारा अज्झयणंमी विमुत्तीए ॥३६३॥ जो चेव होइ मुक्खो सा उ विमुत्ति पगयं तु भावेणं। देस-विमुक्का साहू सव्वविमुक्का भवे सिद्धा ॥३६४॥ (अ. १६,२५) आयारस्स भगवओ चउत्थचूलाइ एस निज्जुत्ती। पंचमचूलनिसीहं तस्स य उवरिं भणीहामि ॥३६५॥ सत्तहिं छहिं चउचउहि य पंचहि अट्ठट्ठचउहि नायव्वा। उद्देसएहिं पढमे सुयखंधे नव य अज्झयणा ॥३६६॥ इक्कारस ति ति दो दो दो दो उद्देसएहिं नायव्वा। सत्त य अट्ठ य नवमा इक्कसरा हुंति अज्झयणा ॥३६७॥ समाप्ता श्रीश्रुत-केवलिभगवद्भद्रबाहुस्वामिविरचिता निर्ग्रन्थगच्छक्रमायातश्रीमत्तपोगच्छाधिपभूपेन्द्रबोधकसिद्धान्तवाचकाऽऽगमोद्धारकश्रीमत्सागरानंदसूरिपुरंदरसंशोधिता भगवदाचाराङ्गसूत्रनिर्युक्तिः ॥